गुजरातीमां महाप्राण व्यंजननो अल्पप्राण थवो

- हरिवल्लभ भायाणी

अंत्यस्थाने

१. खनो क (घणुंखरुं अर्धतत्समोमां)

सं. आशिषा > आशिखा > आशका

सं. कालुष्य > कालुक्ख > काळखं, काळक

सं. धनुष्य > धनुख > धनक

सं. संतोष >संतोख - संतोक

२. घ नो ग :

प्रा. डुंघअ > डूंघो, डूंगो

सं. स्ताध, ताध > ताग, (अ)थाग

सं. शिखा > सिघा > शघ > शग

सं. सिंह > सिंघ > संग ('अभेसंग' वगेरेमां)

३. छ नो च :

सं. भृगुकच्छ > भरुअच्छ > भरूच

सं. कपिकच्छु > कौवच

४. झ > ज :

प्रा. तुज्झ > तुज

मुज्झ > मुज

सं. संबुध्यते > प्रा. संबुज्झइ > समजे

सं. संध्या > प्रा. संझा > सांज

सं. बाह्य > प्रा. बज्झ > बाज (खेडावाळ)

सं. स्निग्ध > प्रा. सिणिज्झ > सणीजुं

५. ठ नो ट :

सं. काष्ठ > कट्ठ > काठ, काट(माळ)

सं. धृष्ट > धिट्ठ > धीठ, धीट

सं. यष्टि, प्रा. लट्ठि > लाठ, लाट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(प्राकृतमां आ प्रक्रिया प्रा. उट्ट < सं उष्ट्र, प्रा. इट्टा < सं. इष्टा, इष्टका एमां जोवा मळे छे. लोकबोलीमां मोंपाट्य ि मोंपाठ)

६. ढ नो ड :

सं. आषाढ : अशाड

सं. अर्ध > प्रा. अड्ढ (जेम के सं. सार्ध परथी साडा (पांच वगेरे). साड (त्रीस),अष्ट > अड्ढ > आढ > आड : आडत्रीस < प्रा. अड्ढतीस < सं. अष्टत्रिंशत् वगेरे), अड (सठ),< प्रा. अड्ढसट्ठि, < सं. अष्टषष्टि वगेरे.)

सं. स्तब्ध > प्रा. ठड्ढ > ठंडुं

सं. श्रेढि > प्रा. सेढि, शेड

सं. श्रिष्टि, प्रा. श्रीढि > सीडी

(उष्माक्षर पछीनो महाप्राण लोकबोलीमां अल्पप्राण उच्चारातो होय छे: काष्ट, कनिष्ट, श्रेष्ट, स्वादिष्ट, अवस्ता, आस्ता वगेरे)

७. थ नो त :

सं. शल्यहस्त > प्रा. सेल्लहत्थ > शेलत

सं. वितस्ति > प्रा. विहत्थि > वहेंत

प्रा. नेसत्थी > नेस्ती

८. ध नो द :

सं अर्ध > प्रा. अध्द > अद : अदकचरुं , अच्छेर वगेरेमां

सं. एकार्ध > एकाध > एकाद

सं. सिद्धि > सद (बोरसद वगेरे गामनामोमां)

लोकबोलीमां बाद (बाध), शीद, सराद (श्राद्ध) वगेरे

अनुस्वार पछी :

सं. आसंध > आसंद

सं. दशबंध > दसोंदी

सं. वालबंध > वाळंद

सं. वर्षबंध > वरसोंद

(लोकबोलीमां बंद(बंध)

मध्यवर्ती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छ नो च :

सं कच्छभ, कच्छप > काचबो

ध नो द :

सं. अधिक > अदकुं

भ नो ब :

सं. अभिलाषा > अबळखा

सं. अद्भुत > अदबद

सं. अभक्ष्य > प्रा. अभक्ख > अवखो, अबखे

अनुस्वार पछी :

सं. अत्यद्भुत > प्रा. अच्चब्भुअ > अचंबो

सं. करंभ > करंबो

सं. कुसुंभ > कसुंबो

सं. डिंभ > डेबुं

(संस्कृतमां लंभ परथी लंब अने डिंभ तेमज डिंब मळे छे.

सं. मल्लस्कंभ > प्रा. मल्लखंभ > मलखंब > मलखम

प्रा. डंभ > डांभ > डाम

★ ★ ★

शब्द चर्चा

अकड

१. **अकडनुं** भारवाचक रूप **अकड, जेम जुद्धो, साच्चे, चोक्कस, नक्खोद, जब्बर** वगेरे

२. **अकडावुं** नामधातु. 'शरीर अकडाई जवुं'. भाववाचक नाम **अकडाई** वगेरे.

३. लाक्षणिक अर्थ 'गर्वीलुं' संस्कृत '**स्तब्ध**' प्रा.'**थड्ढ**' '**अक्कड**, दर्प वाळुं'. सरखावो अंग्रेजी **stiff.** (टर्नर क्रमांक १०१३ **आक्कड.**) गुजराती वगेरेमां **अक्कड** छे ते जोतां मूळ तरीके **आक्कड** उपरांत **अक्कड** पण होय. मूळ **संस्कृत आकृत** होवानी संभावना टर्नर रजू करी छे, पण अर्थो वच्चे घणो **फरक छे.** मूळ अज्ञात मानवुं वधु योग्य छे.

★ ★ ★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकबंध

बंध साथे समस्त बीजा शब्दो : अंकोडाबंध, कटीबंध, (मकान) छोबंध, **बेला**बंध, मेडीबंध, घडीबंध, शिखरबंध. उपरांत पाघडीबंध, चमरबंधी, कमरबंध नाम छे.

उपर्युक्त **बंध** वाळा विशेषणात्मक समासोमां मूळे तो **बंधने** बदले **बद्ध** छे . पछीथी **बद्ध** अने **बंध** वच्चे गोटाळो थयो छे. **श्रेणीबद्ध अने कटीबद्ध, सिलसिलाबद्ध** (पुरावा)मां **बद्ध** छे ज. **अकबंध**, जेनो **बांधो**, **बंध** तूटेल नथी, जे अखंड छे ते, साबूत, एमांना अक ना मूळमां सं. **अक्षत**, प्रा. **अक्खअ** होवानी अटकळ टके तेम नथी. वधु संभव मूळ तरीके **एकबद्ध, इकबद्ध** होय एम लागे छे. सरखावो **अकसर** 'मोटेभागे', मूळे अपभ्रंश **इक्कसरि**. **अकबंध** एटले 'जेनो एक ज बंध छे'. जे अतूट छे, जे एकमां बद्ध छे, जेना भागला नथी पड्या. ते सरखावो हिंदी **अकटक** 'एक टके'.

★ ★ ★

अघरुं

१. अर्थद्रष्टिए सं. अग्राह्य 'ग्रहण करवुं मुश्केल' – एनो आ पर्याय छे. पण ध्वनिदृष्टिए **अग्राह्यमांथी** अर्धतत्सम लेखे पण अघरुं निष्पन्न थइ शके तेम नथी.

२. अग्राह्य परथी **अग्राज** > अगराज 'जे खावा योग्य नथी, जे खावुं निषिद्ध छे' ए शब्द ऊतरी आव्यो छे.

३. सं **अग्रहकं** , अप. **अग्रहउं** > अघ्रउं > अघरुं एवे क्रमे अघरुं बन्यो लागे छे. पूर्ववर्ती हकार साथे जोडाईने महाप्राण बन्यानी प्रक्रिया अर्धतत्सममां जाणीती छे. ग्रहण > घरण, **ग्रहणक** > घरेणुं, **ग्राहक** > घराक, **विग्रह** > वघरो, **संग्रह** > संघरो, **उदग्राहण** > उघराणुं, ब्राह्मण > भ्रामण, बृहस्पतिवार > भ्रेस्पतवार, ग्रहिल्ल > घेलुं, गहन > घेन, मोहडुं > मोढुं, गद्दहड > गधेडो वगेरे (जुओ 'व्युत्पत्तिविचार', पृ.१५२,१६०, 'भाषानिमर्श' पृ. १५९)

★ ★ ★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अघरणी

१. अघरणी 'सीमंत' 'पहेलवेलो गर्भ रहे त्यारे सातमे मासे करातो उत्सव' अघरणियात 'अघरणीवाळी स्त्री', बोलीनां रू प अधयणी, अघअणी छे.

२. पंदरमी सदी पहेलांना भीमकृत 'सदयवत्स–वीर–प्रबंधमां' (संपा, मंजुलाल मजमुदार, १९६०) आघरणी एवा रूपे आ शब्दनो प्रयोग थयो छे. त्यां प्रसंग एवो छे के एक ब्राह्मणनी वहुना सीमंतना उत्सवमां ज्यारे ते वाजतेगाजते पीयरथी नीकळी होय छे, त्यारे गांडो थयेलो राजहस्ती रस्तामां धसी आवे छे. सौ नासी जाय छे, पण अघरणियातने हाथी कमरथी सूंढ वडे पकडे छे. (पृ.७–९)

आघरणि –अवसरि जयकार (पद्यांक ४४)

आघरणि–अवसरि घरणि आवंती आवासि (पद्यांक ५६)

बीजो प्रयोग ११४३ना लक्ष्मणगणिकृ त प्राकृत कृति 'सुपासनाहचरिय' (संपा. हरगोविंददास शेठ , १९१८–१९१९)मां मळे छे.

सं. अग्रहणिका > प्रा. **अग्गहणिया**, बोलीमां प्रचलित रूप अग्रहणिया > अघ्रणी > आघरणी एवो विकासक्रम होय. ग्र + ह > घ्र माटे जुओ अधरुं नीचे टांकेलां उदाहरणो ।

आघरणी उपरथी **अघरणी**, पछी **अघरणियात.**

★ ★ ★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छाल, छीलटुं, छोलवुं

१. छाल प्रयोगो: केळानी छाल. झाडनी छाल. लींबुनी छाल.

(१) सं छद् ('ढांकवुं')+ लि.> प्रा. छल्लि 'त्वचा', (जेम आर्द्र > प्रा. अल्ल. पद्र >पल्ल, भद्र > भल्ल) (टर्नर, क्रमांक ५००५) टर्नरेआना मूळ तरीके कोई आर्येतर शब्द होवानुं संभवित मान्युं छे ते उपर्युक्त भद्र > भल्ल वगेरे जोतां बराबर नथी. शब्द मूळे भारतीय–आर्य होवा अंगे शंका राखवानुं सहेज पण कारण नथी. छालुं 'नाळियेर वगेरेनुं छोतरुं'. 'लाकडानो वेर'.

(२) छालां पडवां '(हाथमां) छाला पड्यां' – एमानां छालु–नुं मूळ जुदुं ज होय.

(३) छाल 'पीछो, केडो' (छाल छोडवो, छाल मूकवो) एनुं मूळ पण जुदुं होवानुं लागे छे.

(४) खाल. 'चामडी' (खाल उखेडी नाखवी), प्रा. खल्ला – एनी साथे छाल–एने क शो संबंध नथी.
(टर्नर, क्रमांक ३८४८.)

(५) छालक (प्रयोगो:) प्रवाहीनुं छलकावुं ; 'छलकातुं आवे बेडलुं, मलकाती आवे नार:' (ढळवुं : ढळकतुं, फरवुं : फरकवुं, सखुः सरकवुं एम छलवुं : छलकवुं /छलकावुं), छलाछल,छलोछल, छलबलवुं एने छाल साथे कशो संबंध नथी.

(६) छालकुं 'छीछरुं, आछकतुं', 'गधेडापर नाखवानी बे पासियां वाळी गूण अने छालियुं (हिं. छालिया) 'पहोळा मोंनो वाडको', छल्लो (छल्लो भीड्यो) एमनुं मूळ पण जुदुं होवानुं जणाय छे.

२. छीलकुं, छीलटुं (छीलेटुं) 'छोडुं,. छोतरुं' सं. छिद् + ल = छिल्ल > छील एना परथी आख्यातिक धातु छीलवुं (हिं. छीलना) 'छोडां काढवां, छोलवुं'. छील + लधुता वाचक अंगविस्तारक क के ट. छीलकुं, छीलटुं,
अर्थना फेरफार माटे सरखावो छेदन > छेअण > छेण, नामधातु छीणवुं अने छेदनिका > छेअणिआ > छीणी.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

★ ★ ★

३. छोलवुं. द्रश्य छोल्ल = तक्ष्. छोलां = छालां.

आनो संबंध सं. क्षुद्, क्षुण्ण जेना परथी छूंदवुं थयोछे. एनी साथे छे के केम ते कही न शकाय. छोलाटवुं 'छोल छोल करवुं' सरखावो गोदो > गोदारवुं; धोको > धोकारवुं रंग रंगाटी घोल > घोलाटवुं वगेरे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डांग 'लाठी'

प्रा. डंगा. (टर्नर, क्रमांक ५५२०)

ढोसो 'चूरयुं' बनाववा माटे घउंनो लोटनो बनावातो जाडो खीखरो' नेपाळी ढोसे 'जाडो रोटलो', 'ढुस्स' 'पवनथी फूलेलुं'. बंगाळी ढुसा जाडियोने आळसु'.

मूळ तमिल दोषै 'आपणे त्यां ढोसा नामे प्रचलित खावानी वानगी'

(टर्नर, क्रमांक ५५९४ ढुस्स, 'सोजेलुं, फूलेलुं').

ढकोसलां

(१) आभास, मिथ्या देखाव, (२) कपट व्यवहार.

ढग (ढगलो).

'पुंज' लहंदा ढिंग पं. ढिग्ग, हि. ढीग, बोलीमां घणुं, पुष्कर

सरखावो लहंदा : ढेर 'घणुं'

(टर्नर, क्रमांक ५५८५, ढिग्गनी नीचे बंगाळी ५५९९ ढेर नीचे)

ढगरो 'फूलो'

ढेका. ढगरा

सरखावो ढग, ढगलो

ढेकोनी जेम मूळ अर्थ 'उपसेलो भाग' होय.

ढगो 'आखलो' लाक्षणिक 'जाडोपाडो'

पं. ढग्गा; ढग्गी 'गाय'

ढबु (ढबूडी, ढबूलो, ढबूली): 'चींथरानी ढींगली' (बाळ भाषामां)

ए नानी जोडी अने ढींगणी होय.

ढबु (ढब्बु, ढबूवुं) 'अक्कल वगरनुं, मूर्ख' आ अर्थ लाक्षणिक लागे छे. जे जाडो, ढींगणो, ते मूर्ख जड. खूडी 'बेठा घाटनी नानी लोटी, टोचली' टबु, खुडी 'नानी, ढींगणी स्त्री' लाक्षणिक खूडी ठबूडी बंने मूळे एक होय एम लागे छे.

ढब्बु (ढबु)

१. पाई, अघेलो, पैसो, आनो – एनुं ज्यारे चलण हतुं त्यारनो, बे पैसानी किंमतनो तांबानो जाडो, मोटो सिक्को.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढबुनुं भारदर्शक रूप ढब्बु. रूपांतर : ढबुवो. सरखावो लट्टु लाडु लाडूवो. हिंवी ढबु आ, ढबुवा, हिंदी ढब्बु जाडियो सरखवो लक्स खडधूस

'कथाणव'मां ठेव्वुका. मराठी ढबू, ढब्बू कानडी डब्बु, तेलुगु ढब

३. सरखावो ढबुडो, ढबुलो 'नानो ढींगलो' स्त्री ढबुडी, ढबुली, आ जाडो, ढींगलो, ढींगलो' मूळ अर्थ होय. सिक्कावाचक अर्थ तेना साम्मे.

२. कूमाउनी ढपुवा, ढेपुवा, पंजाबी ढऊआ, ढबुआ हिंदी लढब्बु, ढबुआ ढिबुआ ढेबुआ नेपाळी ढेउआ, ढेबुवा

ढकवुं (१) 'नीचु नमीजवुं, (२) प्रवाहीनुं नीचु पडीजवुं 'नीचु वहीजवुं' 'माथुं ढळीगयुं' 'पाणीनो ढाळ' जमणीबाजुनो ढाळ रस्तानो ढाळ उतरवो 'पहेली ढाळ, वगेरे. रागनो ढाल (पु. स्त्री.) ढोलाव, ढालस ढाळो, धातुना रसनो ढालबंध, (एक) पुस्तकनुं नाम ढालसागर. ढलकवुं 'सहेज नमीजवुं' 'ढळकती ढेल' ढाळीने करवामां आवेलो गड्ढो के आकार, लगडी ढढली जवुं (ि ढकढक जवुं)' 'नमी वडवुं'. भीत ढढळी गई. ढळतुं- ढळकती ढेल - ढाळ पु. - ढोळाव ढोळ चढाववो - गीतनी ढाळ स्त्री ढाळो ढढळी गयेलुं 'बीबां', ढाकगर एक ढाकियुं ढोळवुं 'बेसनी विनानुं, ढळी जाय तेवुं वासण

(२) 'पाणी ठळीजवुं' ि घोकाई जवुं, ढोलावुं. प्रेरक ढोकवुं. पंखो ढोलवो ढोल चडावबो 'ओप चढाववो' ढोल - ढाल ढोल- फोड.

प्राकृत ठलइ, ढालइ

बंने अर्थ वाळा नव्य वासीय - आर्य शब्दोमांथी जुओ टर्नर, क्रमांक ५५८१. ढलती, ५५९३ ढुलति, डढाक, ढाक वगेरेनो मूळ तरीके ढल् अने ढोलवुं वगेरेनां मूळमां ढुल् छै.

★ ★ ★

ढाढी.

ए नामनी धंधादारी ज्ञाति कृष्णजन्म उजववा भेरी वगाडनार ढाढी नंदयशोदाने त्यां जईने उत्सवमां भाग लेता ढाढी लीला 'वैष्णव मंदिरोमां तेमज राते मळेला वैष्णवोना समूहमां ढाढी अने ढाढण टप्वो खेलता ङ्गश्री कृष्णनी लीलाना पद गाय छे ते

प्रा. ढड्ढ 'भेरी' ढड्ढ. ढड्डिस ढंढ ढंपोलुं. पोलुं ढंढ ढम ढोलने मांहे पोल टर्नर, क्रमांक ५५७६ ढड्ढ 'जाडुं, उपसेलुं, सोजेलुं' ए उपर्युक्त ढड्ढनो लाक्षणिक अर्थविस्तार होय.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाकवुं

प्रा. ढक्कइ, ढंकइ 'ढांके छे'

गुड ढांकवुं (नाम ढांकण, ढांकणुं, ढांकणी, ढांको–ढूंबो वगेरेः

(टर्नर, क्रमांक ५५७४)

ढीको, ढींको

'मूढीवाळीने मरातो धब्बो, धुस्तो' समात्य ढीका धूंबी ढींक (ढीका) मारवी

ढेको 'कूलो'.

मूळ अर्थ 'ढोरो' उपसेलो भाग' ढेका ढैया 'खाडाटेकरा' आमां ढैया ए मूळ ढहिया छे हिंदी ढहना (दिवाल वगेरेनुं ढळी पडवुं) ढेका ढकियामां ठकिया 'ढाळ' एटले नीचो भाग खाडो समानार्थे ढगरो, ढींढुनो मूळ अर्थ पण आवो ज।

ढीम, ढीमचुं, ढीमणुं

ढीम न (ढीमचुं) 'पथ्थरनुं मोटुं चोसलुं' लाक्षणिक 'जाडुं मोटुं गड्डुं' ढीमडुं लाकडानो गड्डो

ढीम, ढीमुं, ढीमणुं (डु) 'मार लागवाथी अथढावा कुटावाथी, कांईक करडवाथी शरीरनो उपसी आवतो कोई भाग, सोजो'

क्रमांक ५५९१ ढीम्म ढेम्म

पंजाबीमां अर्थ ढेबाळो, हिंदीमां 'लोंदो, ढेखावो,' मराढी ढेया ढेमुस 'शरीर उपर उपसी आवतो सोजो.ढींढु कूलावाळो भाग'

ढीढुं 'फुल वाळो भाग'

टर्नर क्रमांक ५५९९ नीचे टीड्ड, विड्ड, ढींढ, ढेंड्ड, ढेंढ ए अटकळेल मूळ शब्दरूपो नीचे नव्य भारतीय भाषाओमांथी जे शब्दरूपो मुख्यत्वे 'पेट, फांदो' एवो अर्थ धरावे छे.

सरखावो साथे सिंधी ढींढो 'पतंगनो वच्चे वांसनी शीप' गुज ढड्डो समानार्थ ढेको अने ढगरोनो मूळ अर्थ जोतां ढीढुंनो मूळ अर्थ पण 'उपसेलो भाग, ढोरो' होय एम लागे छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढेबरुं

सरखावो सिंधी ढेबिरो

टर्नर क्रमांक ५५८० नीचे 'लोंदा' एवा सामान्य अर्थना जे विविध मूळ शब्द आप्या छे तेमां एख आ छे टबुनी नीचे नोंध्युं छे तेम 'जाडुं', 'ढींगणुं' एवी पण अर्थछाया छे.

ढीबवुं उपरथी जे ढीलीने बनावाय छे. ते ढिब्बिर, ढेब्बिर, तेना परथी ढेबरुं ए थैपलु पण कहेवाय छे. जे शेमीने बनावाय छे ते थेपलुं.

ढेसक्षे (केशमां ढेसरो, ढेस्यलो, ढेसको पण आप्या छे.)

'विष्ठानो ढगलो, पादळो'.

कोशमां ढेसं नो 'भाखरो जाडो रोटलो' एवो अर्थ आपीने 'पोदळो, विष्ठा' ए अर्थ लाक्षणिक होवानुं कह्युं छे. पण ढोसो शब्द जोडां ढेसं शब्दरू प शंकास्पद जणाय छे. मने मात्र ढेसडो (बोलनो उच्चार ढेहडो)

टर्नर, क्रमांक ५६०२ ढेस, ढेंस 'लोंदो, ढगलो' एनी नीचे पंजाबी ढेई 'ढगलो' नेपाळी ढिस्को 'टेकरो' वगेरे आपेल छे.

ढोल (ढोलकुं ढोलक) (ढोली, ढोलीडो वगाडनार)

प्रा. ढोल्ल (टर्नर, क्रमांक ५६०८ ढोल, ढोल्ल)

दोनीडा धडूकया लाडी चालो अपणे घेर रे मही सागरने आर ढोल वागे छे.

ढोल ढूम ढम्या ढोल ढमके छे. ढोलनगारा ढमढाल, मांहे पोल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org